करवाई गयी और आगरा में महलों के बाग में झरोखा के सामने रखवा दी गई। जब कर्णसिंह लौटकर घर जाने लगा तो उसे विदाई में एक घोड़ा, एक विशेष हाथी, एक सम्मान सूचक पोशाक, एक ५०,००० रुपये के मूल्य का मोतियों का हार और एक २,००० रुपये की कीमत की रत्नजटित कटार भेंट की गई। जहांगीर ने हिसाब लगाया कि 'जब से वह मेरी सेवा में उपस्थित हुआ तब से लेकर विदा के समय तक उसे जो कुछ प्राप्त हुआ उसका मूल्य २००,००० रुपये था, इसके अतिरिक्त ११० घोड़े तथा पांच हाथी और मिले और मेरे पुत्र खुर्रम ने उसे समय-समय पर जो कुछ भेंट किया था वह अलग।' किन्तु स्वाधीनता और प्रतिष्ठा की जो हानि हुई थी उसका प्रतिफल राणा को कभी नहीं मिल सकता था।"

अहमदनगर की विजय
(१६१७–१६१८ ई०)

अकबर ने उत्तरी भारत की विजय के पश्चात् दक्षिण भारत विजय की नीति अपनायी थी। उसने दक्षिण में असीरगढ़ के दुर्ग को अपने अधिकार में करके उत्तर से दक्षिण में जाने के मार्ग को खोल दिया था और कुछ समय के लिये खानदेश तथा अहमदनगर जीत लिये थे। अकबर की मृत्यु के समय १६०५ ई० में मुगल साम्राज्य में सम्पूर्ण खानदेश तथा अहमदनगर के कुछ भाग सम्मिलित थे। अकबर के देहावसान के पश्चात् जहांगीर ने भी साम्राज्यवादी नीति के उद्देश्य से दक्षिण में विजय एवं प्रसार की नीति अपनायी। जहांगीर के लिए अहमदनगर का शेष भाग जीतने तथा दो स्वतन्त्र रियासतों बीजापुर एवं गोलकुन्डा को परास्त करने का काम शेष था।

इस समय अहमदनगर की शासन सत्ता का भार मलिक अम्बर पर था। वह अत्यन्त सुयोग्य, साहसी, प्रतिभाशाली तथा स्वामीभक्त अधिकारी था। उसने अहमदनगर के खोये हुए प्रान्तों को मुगलों से पुनः प्राप्त कर लेने तथा अहमदनगर के प्राचीन गौरव को पुनः स्थापित करने का संकल्प किया। उसने अकबर की मृत्यु का लाभ उठाकर शीघ्र ही अल्प अवधि में ही अहमदनगर की सैनिक और आर्थिक व्यवस्था को संगठित कर लिया था। वह मराठा रणनीति में दक्ष था। गुरिल्ला युद्ध के हेतु उसने मराठों की एक सेना संगठित कर ली तथा टोडरमल के सिद्धान्तों के आधार पर राज्य की राजस्व व्यवस्था का पुनः संगठन किया। इसके पश्चात् वह उस प्रदेश को पुनः प्राप्त करने के प्रयत्न में जुट गया जिन पर मुगलों ने अधिकार कर लिया था।

अहमदनगर के विरुद्ध मुगल सैनिक अभियान (१६०८–१६१० ई०)—सन् १६०८ ई० में जहांगीर ने अहमदनगर की विजय के लिये अब्दुर्रहीम खानखाना की अधीनता में सर्वश्रेष्ठ १२,००० अश्वारोहियों की एक विशाल सेना दक्षिण में भेजी। अत्यन्त पराक्रम के पश्चात् भी खानखाना विशेष सफलता न प्राप्त कर सका। अहमद-

Scanned with CamScanner

नगर के प्रधानमंत्री मलिक अम्बर के कारण मुगलों की विजय के प्रयत्न असफल रहे। साथ ही अमीरों के पारस्परिक मतभेदों के कारण और असफलता से मुगलों का मनोबल गिर गया था। इस पर जहांगीर ने सन् १६१० ई० में बुरहानपुर के सूबेदार शहजादा परवेज को आसफखां के साथ दक्षिण विजय के लिये भेजा। पर वह भी कोई विशेष सफलता प्राप्त न कर सका। जहाँगीर ने एक के बाद एक-खान जहां लोदी, अब्दुल्लाखां आदि अनुभवी सेनाध्यक्ष दक्षिण विजय के लिये भेजे। किन्तु इन मुगल सेनापतियों की आपसी फूट एवं वैमनस्यता के कारण यह प्रयास भी असफल रहा। मलिक अम्बर के मराठे सैनिक मुगलों पर अचानक आक्रमण करते और उनकी सैन्य सामग्री की व्यवस्था अस्त-व्यस्त कर भाग जाते थे। इस प्रकार की रणनीति की मुगल सेना अभ्यस्त न थी। इससे मुगल सेना ऊब गई और उनका नैतिक ह्रास होने लगा।

सन् १६११ ई० में मुगलों ने अहमदनगर को चारों ओर घेर कर आक्रमण करने की योजना बनायी। अब्दुल्लाखां ने गुजरात की ओर से तथा खानजहां लोदी, मानसिंह और अमीर-उल-उमरा ने बरार तथा खानदेश की ओर से एक ही समय आक्रमण करने की व्यवस्था की। परन्तु अब्दुल्ला खां ने अपने साथियों की प्रतीक्षा किये बिना ही आक्रमण कर दिया। मलिक अम्बर के मराठे सैनिकों ने उस पर अचानक हमला बोल दिया और उसे गुजरात की ओर खदेड़ दिया। इससे मुगलों की पराजय हुई ओर उन्हें महान् क्षति उठानी पड़ी। जहांगीर इस पर क्रुद्ध हुआ। उसने अब्दुल्लाखां को हटाकर अब्दुर्रहीम खानखाना को दक्षिण अभियान का प्रमुख सेनाध्यक्ष बनाकर भेजा। खानखाना ने युद्ध जारी रखा और १६१२ ई० में अहमदनगर की सेना को परास्त किया परन्तु मुगल सेना में पारस्परिक फूट के कारण खानखाना को भी कोई विशेष सफलता नहीं मिली।

शाहजादा खुर्रम की अल्पकालीन अहमदनगर विजय—दक्षिण में निर्णायक परिणाम न निकलने और मलिक अम्बर के विरुद्ध मुगलों को चिर-असफलता के कलंक का टीका साम्राज्य के माथे से हटाने के लिये जहाँगीर ने नूरजहां के परामर्श से शाहजादा परवेज को बुला लिया और खुर्रम को दक्षिण अभियान का भार सौंपा। सन् १६१६ ई० में जहांगीर ने खुर्रम को शाह सुल्तान का पद देकर अहमदनगर के लिए रवाना किया। शाहजादा खुर्रम मार्च सन् १६१७ ई० में बुरहानपुर पहुंच गया। जहांगीर स्वयं रण-स्थल के पास रहकर अपना प्रभाव डालने के लिए अपने पूरे दरबार के साथ मांडू नामक स्थान पर आ गया।

(i) खुर्रम की प्रथम विजय और सन्धि—खुर्रम ने दक्षिण में पहुंचते ही मलिक अम्बर से लिखा पढ़ी शुरू कर दी। उसने बीजापुर के सुल्तान से मैत्री करके उससे अहमदनगर को सहायता देना बन्द करा दिया। मुगलों की विशाल सेना की तड़क-भड़क देखकर मलिक अम्बर भयभीत हो गया और उसने खुर्रम की सारी

Scanned with CamScanner

पहुंचकर मैंने नमाज एवं खुतवा पढ़ने का आदेश दिया। वहाँ एक गाय की बलि भी दी गई और अन्य ऐसे काम किये गये जो किले की नींव पड़ने के समय से अब तक न किये गये थे। यह सब मेरी उपस्थिति में किया गया था और मैंने इस महान् विजय के लिये, जिसे कोई पूर्व राजा सम्पादित न कर सका था, झुककर सर्वशक्तिमान् ईश्वर को धन्यवाद दिया। मैंने किले में एक विशाल मस्जिद के निर्माण की आज्ञा भी दी।'

किश्तवार विजय (सन १६२२ ई०)—कश्मीर में स्थित दक्षिण क्षेत्र में किश्तवार एक छोटी सी रियासत थी। यहां हिन्दू राजा राज्य करता था यद्यपि कश्मीर पर मुगलों का अधिकार था। परन्तु किश्तवार अभी तक स्वतन्त्र हिन्दू राज्य था। इसकी वार्षिक आय एक लाख रुपये थी। जहांगीर मुगल साम्राज्य के अन्तर्गत एक स्वतंत्र हिन्दू राज्य के अस्तित्व को सहन नहीं कर सका और उसने कश्मीर के मुगल सूबेदार दिलावरखां को किश्तवार विजय के लिये भेजा। दिलावर खां ने किश्तवार पर आक्रमण करके वहां के हिन्दू राजा को परास्त कर दिया। किश्तवार के राजा को जंजीर से बांधकर जहांगीर के सामने उपस्थित किया गया। इस अपमानजनक दुर्व्यवहार से अप्रसन्न होकर किश्तवार की प्रजा ने विद्रोह कर दिया। किन्तु निष्ठुरता से उसका दमन कर दिया गया। सन् १६२२ ई० में पूर्णरूप से किश्तवार मुगल साम्राज्य में मिला लिया गया।

कन्धार पर आक्रमण—कन्धार अपनी स्थिति तथा व्यापारिक एवं सामाजिक महत्व के कारण सदैव मुगलों और ईरानियों के बीच संघर्ष का कारण बना रहा। यद्यपि दोनों राज्यों में परस्पर शान्तिपूर्ण व्यवहार था, किन्तु एक दूसरे के सन्देह को बचाते हुए वे अपना उद्देश्य पूरा करने की घात में लगे रहते थे। फारस के शाह की नीति जहांगीर से चिकनी-चुपड़ी तथा प्रशंसापूर्ण बात करते हुए उसकी तनिक सी सावधानी से पूरा लाभ उठाकर कन्धार पर अधिकार जमा लेने की थी। **प्रो० एस० आर० शर्मा** लिखते हैं कि "जहांगीर के शासनकाल के प्रारम्भ में खुसरों का जो विद्रोह हुआ उससे ईरानियों को अवसर मिल गया और ईरान के शासक शाह अब्बास ने खुरासानी तथा अन्य सरदारों को कन्धार पर आक्रमण करने के लिये प्रोत्साहित किया। किन्तु मुगल किलेदार शाहवेगखां ईरानियों से अधिक शक्तिशाली सिद्ध हुआ। इसके अतिरिक्त भारत से शीघ्र ही (१६०७ ई०) कुमुक पहुंच गई और शत्रु को पूर्ण पराज्य भुगतनी पड़ी।"

शाह अब्बास सुयोग्य एवं दूरदर्शी राजनीतिज्ञ था। कंधार विजय के अप्रत्यक्ष प्रयास में असफल हो जाने पर शाह अब्बास ने जहांगीर को प्रसन्न एवं मित्र बनाये रखने के लिये अपने ईरानियों और अमीरों के उदण्डतापूर्ण कार्यवाही पर बनावटी आक्रोश प्रकट किया और यह प्रदर्शित किया कि यह आक्रमण उसकी बगैर अनुमति के किया गया है। उसने जहांगीर के प्रति सच्ची मित्रता प्रकट की और आशा

प्रकट की कि इस दुर्भाग्यपूर्ण घटना से किसी प्रकार का मनमुटाव नहीं रहेगा। जहांगीर ने सरलता पूर्वक अपने पड़ौसी के इन कूटनीतिक आश्वासनों को मान लिया। जहांगीर स्वयं काबुल पहुंच गया, उसने वंगश कबीलों के विरुद्ध युद्ध जारी रखा। गजनी से कन्धार तक का मार्ग साफ करवा दिया। यात्रियों की सुविधा के लिये पेड़ लगवाये, अनाथों और गरीबों को दान दिये तथा जनता पर लगे अनेक कर हटा दिये। ग्यारह सप्ताह की यात्रा के उपरान्त अगस्त सन् १६०७ ई० में जहांगीर काबुल से लाहौर लौट आया। अब शाह अब्बास ने यह समझ लिया था कि सैन्य बल से कन्धार प्राप्त करना असम्भव है इसलिये उसने जहांगीर के प्रति मैत्रीभाव प्रदर्शित करके अपने कुटिल इरादों पर पर्दा डालने के लिये एक कूटनीति अपनायी। उसने सन् १६११ ई०, १६१५ ई०, १६१६ ई० और १६२० ई० में मूल्यवान उपहारों तथा चापलूसी के पत्र सहित अपने राजदूत जहांगीर के पास भेजे। **प्रो० एस० आर० शर्मा** लिखते हैं कि "इस प्रकार की चाटुकारिता एक आवरण मात्र थी, सुन्दर शब्दावली के पर्दे के पीछे शाह अपनी उदण्डतापूर्ण योजनायें तैयार कर रहा था। जब उसने देखा कि भारत की स्थिति के कारण उपयुक्त अवसर आ गया है तो वह प्रवाहयुक्त प्रहार करने से न चूका। १६२१ ई० में एक बार फिर कन्धार को घेर लिया गया और अन्त में १६२२ ई० में ईरानियों ने उसे हस्तगत कर लिया। जहांगीर ने युद्ध की विस्तृत तैयारियां करने का विचार किया और ईरानी राजधानी तक युद्ध करने की आशा प्रकट की; किन्तु शाहजहां के विद्रोह के कारण उसकी सब योजनायें निष्फल सिद्ध हुई। कंधार अधिकार करने के उपरान्त शाह अब्बास ने जहांगीर को एक पत्र लिखा और कहा कि कंधार तो न्यायानुसार ईरानियों का ही है और आपको अपने आप ही उसे मेरे सुपुर्द कर देना चाहिए था; साथ ही साथ उसने विश्वास दिलाया कि "दोनों सम्राटों के बीच एकता तथा मित्रता की नींव को सुदृढ़ करने का प्रत्येक प्रयत्न किया जायगा।" जहांगीर ने शाह पर विश्वासघात का दोष लगाया और शाहजादा परवेज को कन्धार को पुनः विजय करने के लिए आदेश दिया। किन्तु खुर्रम के खुल्लम-खुल्ला विद्रोह करने के कारण उसमें सफलता नहीं मिली। इस प्रकार कन्धार का मुगलों के हाथ से निकल जाना अपमानजनक था। इससे मुगलों को गहरा आघात लगा।

यद्यपि कन्धार जहांगीर के हाथ से निकल गया था, फिर भी उसने मेवाड़, कांगड़ा । किश्तवार की प्रमुख विजयों द्वारा अपने पिता अकबर से प्राप्त विशाल साम्राज्य की सीमाओं में और अधिक वृद्धि की।

Scanned with CamScanner